आर. एन. आई. 31109/77
JaipurCity / 224 / 2021-23
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

02 अगस्त 2023, अगस्त (प्रथम) • कुल पृष्ठ : 8 • मूल्य : 2/- • वर्ष : 46 • अंक : 9

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

संस्थापक सम्पादक : अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल
सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल
सह-सम्पादक : पीयूष जैन

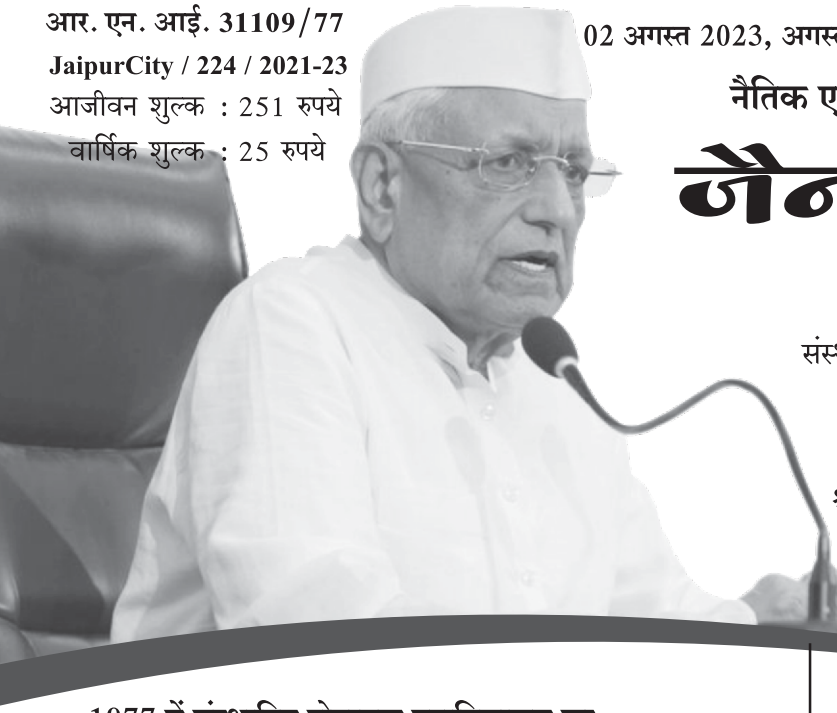

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय

47वाँ स्थापना दिवस

1977 में संस्थापित टोडरमल महाविद्यालय का...

47वाँ स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

जयपुर : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर अपने गौरवमयी इतिहास, अपने उद्देश्यों की अड़िगता तथा डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल की रीति-नीति के साथ 47 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

इस उपलक्ष्य में दिनांक 24 जुलाई, 2023 को महाविद्यालय के 47वें स्थापना दिवस के मंगल प्रसंग पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर के निर्देशन में एक विशिष्ट कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमार गोदिका, जयपुर ने की। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर; पण्डित अभिनंदन शास्त्री, खनियांधाना; श्रीमती कमला भारिल्ल, जयपुर; श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, जयपुर; पण्डित कमलचंद जैन, पिड़ावा; पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर; पण्डित सर्वज्ञ भारिल्ल, जयपुर; पण्डित जिनकुमार शास्त्री, जयपुर आदि का समागम प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन पण्डित अमन शास्त्री, लोनी तथा मंगलाचरण उत्सव जैन, बक्स्वाहा ने किया।

इस प्रसंग पर सभा में उपस्थित वरिष्ठ महानुभावों ने महाविद्यालय के महत्त्व को बतलाते हुए उसके स्वर्णिम इतिहास से सभा को परिचित करवाया।

साथ ही डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का वीडियो उद्बोधन प्रसारित हुआ, जिसमें उन्होंने कहा कि मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि हमने महाविद्यालय के प्रारम्भ में जो रीति-नीति बनाईं थीं, वे आज भी कायम हैं। मुझे विश्वास है कि यदि हम इसी रीति-नीति से चलते रहे तो यह महाविद्यालय कम से कम 100 वर्ष तक संचालित होता रहेगा।

शेष पृष्ठ 4 पर...

नवागन्तुक 40 छात्रों ने लिया प्रवेश...

एक मुलाकात : नवपल्लवों के साथ

जयपुर : यहाँ श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के 47वें बैच के नवागन्तुक विद्यार्थियों का परिचय सम्मेलन 16 जुलाई, 2023 को '**नवपल्लव**' के रूप में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

तीन सत्रों में आयोजित इस समारोह के प्रथम सत्र के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमार गोदिका, जयपुर (अध्यक्ष), द्वितीय सत्र के अध्यक्ष श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर (महामंत्री) व तृतीय सत्र के अध्यक्ष डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर (प्राचार्य) थे।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को उपरोक्त तीनों अध्यक्षों के साथ श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, पण्डित पीयूष शास्त्री, पण्डित अनेकान्त शास्त्री भारिल्ल, पण्डित जिनकुमार शास्त्री, पण्डित ऋषभ शास्त्री, पण्डित अमन शास्त्री का उद्बोधन प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त अनेक साधर्मीजन एवं महाविद्यालय के सभी अध्यापकगण इस कार्यक्रम के साक्षी रहे।

इस अवसर पर उपाध्याय कनिष्ठ के नवागन्तुक 40 छात्रों ने संक्षिप्त में अपना परिचय देते हुए शास्त्री करने के उद्देश्य को बताया। साथ ही अध्ययनरत शेष 4 कक्षाओं के प्रत्येक छात्रों का परिचय भी उन्हीं की कक्षा के 4-4 छात्रों ने देते हुए उनकी एवं अपनी कक्षा की उपलब्धियों से सभी को परिचित कराया। साथ ही स्मारक एवं जयपुर में रह रहे स्नातकों का परिचय पण्डित नयन शास्त्री, बरायठा ने दिया। इसी बीच उपाध्याय वरिष्ठ से वंशित जैन, कोटा ने नवपल्लवों के लिए प्रेरणास्वरूप कविता प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के पूर्व में प्राप्त बहुत ही मार्मिक उद्बोधन का वीडियो प्रसारित किया गया, जिसमें उन्होंने इस तत्त्वज्ञान के मार्ग में प्रविष्ट हुए समस्त छात्रों को अत्यन्त सौभाग्यशाली

शेष पृष्ठ 4 पर...

आइये जानें, क्या है प्रशिक्षण शिविर?

प्रशिक्षण शिविर एवं भावभासन परक और जीवनोपयोगी शिक्षण पद्धति

3

सम्पादक की कलम से...

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर
महामंत्री – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि कोई विषय पढ़ाने से पहले हमें छात्रों के पूर्वज्ञान का अनुमान कर लेना चाहिए, उसे पढ़ाने का उद्देश्य बतला देना चाहिए। अब आगे पढ़ें –

जिज्ञासोत्पादक ढंग - छात्र आपकी बात ध्यान से सुनें इसके लिए उनके पास कोई प्रबल कारण होना चाहिए –

- या तो उक्त विषय के साथ उनका कोई हित-अहित जुड़ा हुआ हो।
- आपका कथन उनकी किसी मान्यता पर चोट करना हो।
- आपका कथन किसी ऐसे विषय को स्पष्ट करता हो, जिसके बारे में वे संदेह की स्थिति में हों।

उक्त में से किसी भी स्थिति में छात्र आपके साथ, आपके द्वारा प्रस्तुत विषय के साथ जुड़ जाते है और उनके मन में विषय को जानने की तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हो जाती है। अब वे आपकी बात बड़े ध्यान से सुनने लगते है, अब उन्हें इस कार्य में कोई विलम्ब या व्यवधान वर्दाश्त नहीं होता है। यहाँ तक कि ऐसे में यदि कोई छात्र किसी तरह का व्यवधान पैदा करे तो अन्य छात्र उसे रोकने लगते हैं, इसप्रकार आपकी कक्षा का अनुशासन स्वत: ही बना रहता है।

उक्त स्थिति में जब आप छात्रों की जिज्ञासा शांत करने में निमित्त बनते हैं तो आप छात्रों की दृष्टि में सम्मान के पात्र भी बनते हैं।

मान लीजिये आप पाप का पाठ पढ़ा रहे हैं तो छात्रों से पूँछिये – ''क्या आप जानते हैं पाप किसे कहते हैं?''

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि 100 में से एक भी विद्यार्थी इस प्रश्न का ज़बाब नहीं दे पायेगा, चाहे वे किसी भी आयु वर्ग के क्यों न हों। उस पर तुर्रा यह कि उनमें से किसी को आज तक यह बात मालूम भी नहीं थी कि उन्हें **पाप की परिभाषा ही मालूम नहीं है।**

दरअसल हम अपने जन्म से आज तक व्यापक रूप से इस शब्द का प्रयोग करते आये हैं और कहे-सुने जाने पर मोटे तौर पर इसका अर्थ बच्चे-बूढ़े सभी समझ लेते हैं, पर उन्हें इस शब्द की परिभाषा मालूम नहीं है, वे इसे परिभाषित नहीं कर सकते हैं, मात्र दो वाक्यों में पाप का अर्थ किसीको समझा नहीं सकते हैं।

पाप शब्द का जो भाव हम मोटे तौर पर समझते हैं वह भी पर्याप्त नहीं है। इसका अर्थ बडा व्यापक है, उसका तो हमें किसी को अनुमान भी नहीं है।

आज जब यकायक यह सवाल पूछा जाता है कि – 'पाप किसे कहते हैं?' तब हमें एहसास होता है कि अरे! यह तो मुझे मालूम ही नहीं।

इस जगत का उथलापन तो देखिये – हम दिन-रात पाप करते हैं, पाप करने से डरते हैं, दूसरों को भी पाप के नाम पर डराते हैं। जीवनभर दिन में कई बार इस शब्द का प्रयोग सभी लोग करते हैं, पर कोई नहीं जानता कि आखिर पाप कहते किसे हैं।

आप उनसे पूछिये कि न सही परिभाषा, इतना तो बतलाइये कि पाप अच्छी चीज है या बुरी चीज?

हर कोई इसे बुरा ही बतलायेगा।

तब पूछिये कि यदि पाप करना बुरा काम है तो यह करना चाहिए या नहीं करना चाहिए।

सभी एक स्वर में यही कहेंगे कि नहीं करना चाहिए।

तब आप उनसे पूछिये कि हिंसा अर्थात् किसी को मारना पाप है या नहीं?

सभी लोग इसे पाप ही बतलायेंगे।

तो हिंसा करनी चाहिए या नहीं?

अब भी सभी यही कहेंगे कि नहीं करनी चाहिए।

अब आप उनसे पूछिये कि मंदिर में बली देना हिंसा है या कुछ और? यदि यह हिंसा है तो यह तो पाप हुआ, यह धर्म कैसे हो सकता है?

यदि कोई शत्रु हमारे देश पर आक्रमण करे तो उसे मारना चाहिए या नहीं? यदि हाँ! तो क्या यह हिंसा नहीं है, पाप नहीं है? यदि यह पाप है तो ऐसा करना महान काम कैसे हो सकता है। सम्मानजनक कैसे हो सकता है? पर दुनिया तो इसे महान कार्य मानती है, शत्रुओं से लड़ने और उन्हें मारनेवालों का सम्मान करती है, शत्रुओं से लड़ते हुए मर जाने वालों का भी सम्मान करती है। तो यह तो पाप को सम्मानित करना हुआ, क्या यह उचित है?

छोड़िये देश और धर्म की बात; यह बतलाइये कि यदि कोई आपको मारे तो क्या करना चाहिए, आप क्या करेंगे? यही न! कि उसे मारकर भगाने का प्रयास करेंगे, तो यह हिंसा हुई या नहीं? यह पाप हुआ न? तो यह पाप करना चाहिए या नहीं?

आपके सामने बैठे छात्रों का जो स्तर हो उसके अनुसार इस प्रकार के प्रश्नों की बौछार जब आप उनके ऊपर करेंगे तो उनकी धारणाएँ चरमराने लगेंगी। कभी उन्हें लगेगा कि पाप तो बुरी चीज है, किसी भी हाल में करने योग्य नहीं। फिर जब आप एक परिस्थिति उनके सामने खड़ी करेंगे तो उन्हें लगेगा कि यह तो करना ही चाहिए, करना ही पडेगा, यह किये बिना तो रहा ही नहीं जा सकता है। अब उसकी यह धारणा टूटने-बिखरने लगेगी कि हिंसा हर हाल में पाप है, अब वह किसी हिंसा को अच्छा कहने लगेगा। पाप करने को कभी बुरा तो कभी अच्छा कहने लगेगा। पर अब वह

अपने आपको अनिश्चय और भ्रम की स्थिति में पायेगा, **तब यदि आप उसे तार्किक ढंग से पापों की व्याख्या समझायेंगे और यह बतलायेंगे कि किस भूमिका में, किन परिस्थितिओं में क्या योग्य है, तो निश्चित ही उसकी रुचि आपकी बात सुनने में होगी और वह बड़ी श्रद्धा, धैर्य और शांति के साथ आपकी बात सुनेगा।**

जिज्ञासा पैदा करने की उक्त प्रक्रिया कितनी लम्बी या छोटी हो, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपकी और सामने वाले की स्थिति क्या है, आपके पास अपने विषय के प्रस्तुतीकरण के लिए समय कितना है।

यदि आपको प्रबुद्ध लोगों को 10 सत्रों में यह बात समझानी है कि पाप क्या है तो आप एक पूरा सत्र भी इसके लिए समर्पित कर सकते हैं, पर अगर आपको मात्र एक घंटे में ही यह बात समझानी है तो शुरुआत के 5 मिनिट इस काम में लगाइये और फिर अपने विषय पर आ जाइये। सामनेवाले की पात्रता देखकर भी इस तरह के निर्णय लिए जाने चाहिए।

सामनेवाले की धारणाओं को झिंझोड़ने की इस प्रक्रिया में हमें इतना कठोर और निष्ठुर भी नहीं हो जाना चाहिए कि उसकी मूल आस्था पर ऐसा आघात हो कि वह आपको अपना विरोधी मानकर आपकी बात ही न सुने। तब तो आप अपने प्रयोजन में असफल ही हो जायेंगे। इस प्रक्रिया में सामान्यत: अपने निर्णय सुनाने की अपेक्षा मात्र छात्रों की मान्यताओं पर प्रश्नचिन्ह लगाकर छोड़ देना ही उपयुक्त है। अपने प्रश्नों के बोझ तले जब वे इतने दब जाएँ कि अब उनसे मुक्ति के लिए व्याकुल हो उठें तब उनके सामने तार्किक ढंग से अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करें, आप निश्चित ही सफल होंगे।

अब तक आपके प्रश्नों और प्रस्तुत परिस्थियों के परिपेक्ष्य में उसके परामस्तिष्क (subconscious mind) में पड़ी हुई यह इकतरफा धारणा टूट चुकी है कि हिंसा, झूठ, चोरी आदि बुरे कार्य हैं, पाप हैं और सर्वथा त्यागने योग्य हैं। हालांकि वह सभी तरह के पाप करता था, पर उन्हें नहीं करने योग्य ही मानता था।

अब उसे लगने लगा है कि नहीं हिंसा सर्वथा बुरी कैसे हो सकती है, पाप कैसे हो सकती है। अच्छे प्रयोजन के लिए की गई हिंसा तो अच्छा कार्य है, वह त्याज्य कैसे होगी? और फिर आत्मरक्षा के लिए तो हिंसा करनी ही चाहिए, इसकी इजाजत तो क़ानून भी देता है। इसी प्रकार झूठ बोलने को उचित ठहराने के भी अपने तर्क हैं जो उसे झूठ न बोलने के निर्णय लेने से रोकेंगे। इसी क्रम में उसे कई प्रकार की चोरी भी उचित सी प्रतीत होने लगेगी। ऐसे में **यदि उसे ऐसा लगेगा कि धर्म के अनुसार तो यह सब संभव ही नहीं है, धर्म के सिद्धांत पालना या धर्म के अनुरूप आचरण जीवन में व्यवहारिक (practical) रूप से संभव ही नहीं है तो वह धर्म को अव्यवहारिक (impractical) मानकर धर्म से ही विमुख होने लगेगा।**

अब आप उसे पाप की परिभाषा स्पष्ट करते हुए पाप के पाँचो प्रकारों के बारे में बतलाइये, 'द्रव्य और भाव' पापों के भेद बतलाइये, हिंसा के चारों भेद-प्रभेद बतलाइये और फिर युक्तियुक्त तरीके से और आगम के आधार से यह बात समझाइये कि **किसप्रकार जीव की किस भूमिका में किसप्रकार के पापों की प्रवृत्ति पाई जाना स्वाभाविक है और किसप्रकार क्रमिक रूप से जीव की भूमिका में उत्थान (गुणस्थान बढ़ने पर) के साथ तत्संबंधी पाप प्रवृत्तियों का उन्मूलन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है।** यथा - सामन्य श्रावक के संकल्पी हिंसा का त्याग होना चाहिए पर भूमिकानुसार आरंभी, उद्योगी और विरोधी हिंसा पाई जाना स्वाभाविक है।..... **तो उन्हें समझ में आएगा कि धर्म और धार्मिक आचरण अव्यवहारिक (impractical) नहीं वरन तार्किक, वैज्ञानिक और व्यवहारिक (practical) है, तो वह दोगुनी आस्था के साथ धर्म से जुड़ जाएगा।**

उक्त सम्पूर्ण विवेचन का निष्कर्ष यह है कि छात्रों या श्रोताओं में प्रस्तुत विषय को जानने की रूचि, जिज्ञासा, उत्कंठा और यहां तक कि व्यग्रता पैदा करने के बाद आपका विषय का प्रस्तुतीकरण कार्यकारी (effective) और सफल होगा। उक्त तैयारी के बिना वह आपकी बात सुनेगा ही नहीं, सुन लेगा तो मात्र सुनकर रह जाएगा, उस पर विचार नहीं करेगा, उसे स्वीकार नहीं करेगा और आपका श्रम निष्फल रहेगा।

यह एक तथ्य है कि हमारा धर्म, धार्मिक मान्यताएँ, धार्मिक आचरण और व्यवहार अत्यंत तार्किक, वैज्ञानिक और व्यवहारिक हैं। एक बार कोई व्यक्ति अपने पूर्वाग्रह से मुक्त होकर, खुले दिमाग से तन्मयता पूर्वक हमारी बात सुने, उस पर विचार करे, उसे तर्क की कसौटी पर कसे तो वह इसे स्वीकार न करे, यह सम्भव ही नहीं है।

यदि बाजारू भाषा में कहूँ तो कह सकते हैं कि माल में इतना दम है कि उसे अस्वीकार (refuse) करना संभव ही नहीं, आवश्यकता है एक व्यवस्थित, तार्किक और मनोवैज्ञानिक मार्केटिंग की। एक सशक्त विपणन (distribution system) की। यदि हम ऐसा कर पाए तो यह हम सभी का सौभाग्य होगा।

अगले अंक में पढ़ें कि किस प्रकार हमारा प्रस्तुतीकरण संतुलित होना चाहिए और उसमें क्रमिक विकास होना चाहिए। **(क्रमश:)**

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

'स्थापना दिवस' का शेष...

द्वितीय सत्र

25 जुलाई, 2023 को रात्रि में महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों की मुख्यता से स्थापना दिवस के द्वितीय सत्र का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. शांतिकुमार पाटील, जयपुर ने की।

इस प्रसंग पर सभा में उपस्थित डॉ. ऋषभ शास्त्री, दिल्ली व पण्डित नयन शास्त्री, बरायठा ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं। साथ ही अनेक विद्यार्थियों ने महाविद्यालय के महत्त्व की परिचायक स्वनिर्मित कविताएँ एवं मार्मिक वक्तव्य प्रस्तुत किए।

सर्वांगीण विकास की प्रमुख गतिविधि...

साप्ताहिक विचार गोष्ठियों का प्रारम्भ

1) दिनांक 15 जुलाई, 2023 को रात्रि में '**णमोकार महामंत्र : एक अनुशीलन**' विषय पर सत्र की प्रथम गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने णमोकार महामंत्र के स्वरूप एवं माहात्म्य को विविध दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित संजय सेठी, जयपुर ने की। संचालन मानस जैन, बांसवाड़ा एवं शशांक जैन, सागर तथा मंगलाचरण ध्रुव महाजन, हिंगोली ने किया।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में उपाध्याय वर्ग से संयम जैन, बांसा एवं शास्त्री वर्ग से संयम जैन, फरीदाबाद चुने गए।

2) दिनांक 23 जुलाई, 2023 को आयोजित सत्र की द्वितीय गोष्ठी का विषय '**मोक्षमार्ग में मूलभूत : देव –शास्त्र–गुरु**' रहा।

गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित राजेश शास्त्री, शाहगढ़ ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित कमलचंद जैन, पिड़ावा रहे। संचालन अमन सिंघई, अलवर; आदित्य जैन, सिंगपुर व तंदुल जैन, दिल्ली तथा मंगलाचरण जय जैन, पिपरिया ने किया।

उपाध्याय वर्ग से आदि जैन, सागर एवं शास्त्री वर्ग से एकाग्र जैन, पिड़ावा ने श्रेष्ठ वक्तव्य दिए।

'नवपल्लव' का शेष...

बताया। साथ ही अत्यधिक उज्जवल भावना के साथ अध्ययन की प्रेरणा दी। दादा की अनुपस्थिति में उक्त वीडियो उद्बोधन को सुनकर सभी के हृदय गद्गद् हो गए।

सम्पूर्ण कार्यक्रम महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शान्तिकुमार पाटील के निर्देशन में सहज जैन, छिंदवाड़ा; उत्सव जैन, बक्स्वाहा; कपिल जैन, बम्होरी; अरिहन्त किणिकर, कवठेसर एवं समस्त शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों के सहयोग से सम्पन्न हुआ एवं मंगलाचरण शाश्वत जैन, सागर; सोहम बालिकाई, कुंभोज; एकाग्र जैन, पिडावा ने किया।

ज्ञातव्य है कि महाविद्यालय में आयोजित सभी कार्यक्रम टोडरमल स्मारक के यूटयूब चैनल (PTST) पर देख सकते हैं। अवश्य लाभ लें।

शास्त्री विद्वान द्वारा विशेष धर्मप्रभावना

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के 10वें बैच के स्नातक विद्वान **डॉ. संजयकुमार शाह शास्त्री, परतापुर** जिनशासन के प्रचार-प्रसार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुए सामाजिकस्तर पर अनेक कार्य कर रहे हैं।

इन्हीं कार्यों के मध्य डॉ. शाह ने 14 से 22 जुलाई, 2023 तक कुगवन, उदगाँव में विराजमान आचार्यश्री प्रसन्नसागरजी के 25 पिच्छीधारी संघ को न्याय, दर्शन एवं कातंत्र-व्याकरण का अध्यापन कराया। अभी वर्तमान में आप आर्यिकाश्री सुनयमती माताजी को न्याय व दर्शन के अध्यापन का कार्य कर रहे हैं।

ज्ञातव्य है कि आपने 2020 में आचार्यश्री विभवसागरजी के संघ को लगभग 4 माह तक एवं 2021 में आर्यिका ओमश्री माताजी एवं संस्कृतिश्री माताजी को भी परीक्षामुख, न्यायदीपिका तथा कातंत्र-व्याकरण के अध्ययन कराया।

महाविद्यालय के सुयश

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक विद्वान दिन-प्रतिदिन प्राप्त कर रहे हैं आशातीत सफलतायें।

1) डॉ. ऋषभ शास्त्री, दिल्ली (बैच : 36, सत्र 2012-17) ने '**जैनदर्शन में सम्यक्त्व और मिथ्यात्व का समालोचनात्मक अध्ययन**' विषय पर शोध-प्रबंध कर Ph. D. की उपाधि प्राप्त की। जिसमें सम्यक्त्व और मिथ्यात्व का स्वरूप व भेद, सम्यक्त्वप्राप्ति व मिथ्यात्वनाश की प्रक्रिया, सम्यग्दृष्टि व मिथ्यादृष्टि के गुण-दोष आदि विषयों का शोधपरक विवेचन किया गया है।

2) पण्डित पीयूष शास्त्री, गौरझामर (बैच: 36, सत्र 2012-17) ने NTA द्वारा आयोजित UGC-NET (Dec 22) परीक्षा को हिंदी (कोड-20) विषय में उच्चतम अंकों से उत्तीर्णकर JRF प्राप्त की।

3) पण्डित अनुभव शास्त्री, खनियाँधाना (बैच: 38, सत्र 2015-19) ने NTA द्वारा आयोजित UGC-NET (June 2023) परीक्षा को प्राकृत विषय में उच्चतम अंकों से उत्तीर्णकर JRF प्राप्त की।

3) पण्डित नयन शास्त्री, बरायठा (बैच: 38, सत्र 2015-19) ने राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परीक्षा उत्तम अंकों से उत्तीर्ण की। एतदर्थ आप राजस्थान में संस्कृत विषय के वरिष्ठ अध्यापक के रूप में चयनित हुए।

जैनपथ प्रदर्शक परिवार की ओर से सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

महाविद्यालय के 47 स्थापना दिवस के अवसर पर प्राप्त कविताएँ

इस तीर्थ के वे संत थे

– डॉ. ऋषभ शास्त्री, दिल्ली

मैं तो चतुर्दिक् अंध हो, फूला खड़ा अभिमान से।
मैं हूँ ये तन कर्ता बना, भ्रम में पड़ा अज्ञान से।।
क्या योग था सौभाग्य अद्भुत, इस धरा पर आ गया।
इस आयतन में मोह मेरा, लय हुआ सद्ज्ञान से।।

वे स्थापकर ज्ञानायतन, उपकार ऐसा कर गये।
कि मृतक सम इस लोक को, संजीवनी देकर गये।।
वे दृढ़ विपुल वटवृक्ष थे, वे विश्व में पहिचान थे।
गिरते हुए भी बीज अपने, इस धरा पर धर गये।।

है सत् मिला आतम मिला, वह ज्ञान हममें भर गया।
जिसके हुकम से विश्व में ये, तत्त्व हर इक घर गया।।
वह सूर्य था दैदीप्य तेज, परम प्रताप महान था।
वह अस्त होकर भी हज़ारों, दीप रोशन कर गया।।

वे सूर्य थे या चंद थे, मेरे भ्रमण के अंत थे।
वे मोक्षपथ-दर्शक गुरु, मेरे लिए भगवंत थे।।
इतिहास ये इस विश्व पर, उपकार है चिरकाल का।
यह तीर्थ है सद्ज्ञान का, इस तीर्थ के वे संत थे।।

महिमावाचक संस्कृत श्लोक

– पण्डित नयन शास्त्री, बरायठा

पुण्यलभ्या वरा ज्ञानधाराचिता शास्त्रपारङ्गतै विद्धिरासेविता।
रोचते मे प्रिया पाठशाला सदा स्मारकं स्मारकं भूमि ज्ञानप्रदा।

अर्थ : बड़े ही पुण्य से प्राप्त होने वाली, ज्ञानधारा से व्याप्त, शास्त्रो में पारंगत विद्वानों द्वारा सेवित, यह ज्ञान देनी वाली पाठशाला, यह स्मारक भूमि मेरे हृदय को हमेशा आंनदित करती है।

तुम्हें टोडरमल बनायेंगे

– कपिल शास्त्री, बम्हौरी

रखा गया प्रस्ताव सभा में, इक मंगल धाम बनायेंगे।
रख छाया उसमें टोडरमल की, जिनधर्म का ध्वज फहरायेंगे।
किया संकल्प यह दादा ने, इस मंगलधाम को चलायेंगे।
तुम ज्ञानतीर्थ पर आ जाना, तुम्हें टोडरमल बनायेंगे।

अब माह साल या दशक नहीं, ये दौर बदलने वाला है।
संपूर्ण जगत में ज्ञानतरु का, पुष्प यह खिलने वाला है।
अंधकार जो भरा अज्ञ का, गुरु ज्ञान से गलने वाला है।
अब सारी चिंता छोड़ हर बच्चा, भगवान बनने वाला है।

तुमने जो डाली नीव तत्त्व की, हम पूरा विश्व ज्ञानमय बना देंगे।
ज्ञानसरी के इस प्रभाव में, जन-जन को नहला देंगे।
हे टोडरमल! हे हुकमचंद! जो तत्त्व दिखाया है हमको।
देकर यह तत्त्व जन-जन को, खुद टोडरमल बन जायेंगे।

टोडरमल में पढ़नेवाले, टोडरमल कहलाएंगे।

– सहज शास्त्री, छिन्दवाड़ा

इतिहास का पन्ना पलट के देखो, एक अनुपम बात हुई।
गुरुदेव के वचनों से, प्रेरित हो यह सौगात हुई।
बंद पड़ रहे जैनधर्म के, विद्यालय थे सारे जब।
कांटों मध्य पुष्प सा स्वर्णिम, स्मारक यह आया तब।

संघर्षों की नींव रखी और, ज्ञान कला की छत डाली।
हुकमचंद ने जड़ स्मारक, में चेतनता भर डाली।
ज्ञानतीर्थ की वसुन्धरा यह, ज्ञान की गंगा बहाती है।
टोडरमल के सिद्धांतों को, जन-जन तक पहुँचाती है।

प्रभावशाली संकुल होगा अपना

– अकिंचन पुजारी, खनियांधाना

देखा था स्वप्न बनाने का, दादा को सर्वश्रेष्ठ पण्डित,
दादा ने देखा एक स्वप्न, घर-घर हर घर होगा पण्डित।
इनके समान ही एक और, श्रेष्ठी ने देखा था सपना,
इस भारत भूमि पर प्रभावशाली, संकुल होगा अपना।

जब खोज हुई रथनायक की, सारथी स्वरूप दो रत्न मिले,
ले सिरमाथे गुरु की आज्ञा, जंगल में मंगलाचार किये।
आचार्य देव की परंपरा से, स्मारक गतिमान हुआ,
जिन स्वप्न देख साकार किया, महापुरुषों का इतिहास हुआ।

स्नेह मिलन एवं शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

दिनांक 23 जुलाई, रविवार को आमेर स्थित थम्ब की नसिया में आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति द्वारा आयोजित स्नेह मिलन समारोह, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा लिखित 24 तीर्थंकर विधान एवं टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों के शैक्षणिक भ्रमण का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

समारोह में आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति के सभी 51 पदाधिकारियों एवं सदस्यों को डॉ. शांतिकुमार पाटील के द्वारा समाज की आध्यात्मिक-धार्मिक-आर्थिक-शैक्षणिक उन्नति हेतु कार्य एवं सहयोग करने की शपथ दिलाई। समिति के प्रचार सचिव राजेश जैन ने बताया इस अवसर पर वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बच्चों के लिए आध्यात्मिक क्रिकेट, कुर्सी दौड़, प्रश्नमंच आदि अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराए गए। साथ ही थम्ब की नाशिया में ही वृक्षारोपण का कार्य किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पण्डित जिनकुमार शास्त्री ने किया।

समिति के अध्यक्ष पण्डित संजय सेठी, कार्याध्यक्ष पण्डित पीयूष शास्त्री ने सभी का आभार प्रदर्शित किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम समिति के महामंत्री पण्डित नवीन शास्त्री के निर्देशन में पण्डित श्रीमंत शास्त्री नेज, पण्डित आकाश शास्त्री अमायन के सहयोग से हुआ।

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ कौन?

संयम की साधना, सिद्धों की आराधना, निजात्मा की प्रभावना के कारणभूत दशलक्षण महापर्व के अवसर पर समाज की संस्थाओं एवं नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों द्वारा प्राप्त आमंत्रण के आधार पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। दिनांक 30 जुलाई, 2023 तक प्राप्त जानकारी के अनुसार निर्धारित सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

● ब्र. रविन्द्र जैन 'आत्मन', अमायन	: सोनागिर	● बाल ब्र. सुमतप्रकाश जैन, खनियांधाना	: टोडरमल स्मारक
● पण्डित अभिनन्दन शास्त्री, खनियांधाना	: न्यूजर्सी – 2	● पण्डित राजेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर	: औरंगाबाद
● पण्डित अभयकुमार शास्त्री, देवलाली	: बेलगांवी	● पण्डित बिपिन शास्त्री, मुंबई	: अशोकनगर
● पण्डित शैलेशभाई शाह, तलोद	: महावीर जिनालय–सागर	● डॉ. शान्तिकुमार पाटील, जयपुर	: सांगली
● डॉ. शुद्धात्मप्रकाश भारिल्ल, जयपुर	: दादर–मुंबई	● डॉ. वीरसागर शास्त्री, दिल्ली	: न्यूजर्सी – 1
● डॉ. राकेश शास्त्री, नागपुर	: बेंगलौर	● पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर	: टोडरमल स्मारक
● पण्डित संजय शास्त्री, कोटा	: सीयेटल (USA)	● डॉ. प्रवीण शास्त्री, इंदौर	: ढाईद्वीप जिनायतन

मध्यप्रदेश

इंदौर

ढाईद्वीप	पण्डित राकेश शास्त्री, लोनी
	डॉ. विवेक शास्त्री, इंदौर
	पण्डित सुमित शास्त्री, इंदौर
	पण्डित अशोक शास्त्री, इंदौर
साधना नगर	पण्डित रजनीभाई, हिम्मतनगर
पलासिया	डॉ. अंकुर शास्त्री, भोपाल
रामचंद्र नगर	डॉ. विवेक शास्त्री, दिल्ली
गांधीनगर	पण्डित विकास छाबड़ा, इंदौर
कालानी नगर	पण्डित पदमचंद गंगवाल, इंदौर

भोपाल

चौक मंदिर	पण्डित गौरव शास्त्री, इंदौर
कोहेफिजा	पण्डित रितेश शास्त्री, बांसवाड़ा
अरेरा कॉलोनी	पं. संजय पुजारी, खनियांधाना
ज्ञानोदय	पण्डित निर्मल जैन, सागर
दीवानगंज	पण्डित जगदीश पंवार, उज्जैन

भिंड

परमागम मंदिर	पण्डित राजकुमार शास्त्री, उदयपुर
देवनगर	पण्डित प्रमोद मोदी, सागर

ग्वालियर

फालका बाजार	पण्डित अभिषेक जोगी, मुम्बई
	पण्डित अरविंद शास्त्री, खड़ैरी
दानाओली	पण्डित रजित शास्त्री, भिण्ड
दीनदयाल नगर	पण्डित अरविन्द शास्त्री, गुरसोरा
मुरार	पण्डित समर्थ शास्त्री, हरदा

विदिशा

किला अन्दर	पण्डित आकेश शास्त्री, छिंदवाड़ा
महावीर (जिना.)	पण्डित संजय सेठी, जयपुर

सनावद

सनावद	पण्डित कमलचंद जैन, जबेरा
सीमंधर (जिना.)	पण्डित अंकित मंगलार्थी, आरोन
छिंदवाड़ा	डॉ. अभिषेक शास्त्री, पालडी
मंदसौर	पं. कैलाशचन्द शास्त्री, बीकानेर
सिंगोली	पं. पद्मकुमार अजमेरा, इंदौर
	पण्डित अमित शास्त्री 'अरिहन्त'
दलपतपुर	पण्डित अमन शास्त्री, आरोन
दमोह	पण्डित धनसिंह ज्ञायक, पिडावा
सागर(तारण–तरण)	पं. निखिल शास्त्री, मुंबई
खुरई	डॉ. अरविन्द शास्त्री, जयपुर
सिलवानी	पण्डित विनीत शास्त्री, मुंबई
बेगमगंज	ब्र. सुधाबेन, छिन्दवाड़ा
सोनागिर	डॉ. दीपक शास्त्री, जयपुर
	डॉ. मुकेश शास्त्री, विदिशा
खनियांधाना	पण्डित सुबोध सिंघई, सिवनी
आरोन	पण्डित अभिषेक मंगलार्थी
राधौगढ़	विदुषी प्रमिला जैन, इंदौर
	पं. अशोक शास्त्री, मांगूलकर
बड़नगर	ब्र. नन्हेभैया, सागर
रतलाम	पं. पुनीत मंगलवर्धिनी, भोपाल
उज्जैन	पं. दीपक कोटडिया अहमदाबाद
टीकमगढ़	पण्डित अनुभव शास्त्री, कानपुर
जावरा	पण्डित चैतन्य शास्त्री, काटोल
बीना	ब्र. सुनील जैन, शिवपुरी
बदरवास	पण्डित नितुल शास्त्री, ग्वालियर
पंधाना	पण्डित एकत्व शास्त्री, खनियांधाना
शिवपुरी (नेमि.)	ब्र. रजनी दीदी, नागपुर
सिवनी	पण्डित अमन शास्त्री, दिल्ली
	विदुषी श्रुति शास्त्री, दिल्ली
करेली	पण्डित ऋषभ शास्त्री, दिल्ली
	विदुषी आयुषी 'आत्मार्थी', दिल्ली
मकरोनिया	ब्र. हेमचन्द 'हेम', भोपाल
अमायन	पण्डित अखिल शास्त्री, जयपुर
बेगमगंज	पण्डित हितन्कर शास्त्री, उदयपुर
द्रोणगिरी	पण्डित प्रद्युम्न जैन, मुज्जफरनगर
शाहगढ़	पण्डित मंथन शास्त्री, मुम्बई
फुटेरा	पण्डित प्रतीक शास्त्री, मौ
टिमरणी	पण्डित ज्ञायक शास्त्री, सिलवानी
घोड़ाडोंगरी	पण्डित विशाल शास्त्री, छिंदवाड़ा
जबलपुर	पण्डित अभय शास्त्री, खैरागढ़
कटनी	पण्डित नितिन जैन, सेमारी

विदेश

नाइरोबी	पण्डित देवेन्द्र जैन, बिजौलिया
	पण्डित अशोक जैन, उज्जैन
मोना (USA)	पण्डित अरुण शास्त्री, जयपुर
शिकागो	पण्डित नीलेशभाई शाह, मुम्बई

उत्तरप्रदेश

मंगलायतन	पण्डित विक्रांत शास्त्री,सोलापुर
मेरठ	पण्डित अखिलेश शास्त्री, सागर
सहारनपुर	पण्डित अश्विन शास्त्री,नानावटी
करहल	पण्डित प्रतीक शास्त्री, जबलपुर
मैनपुरी	पण्डित महेश जैन, ग्वालियर
जैतपुर	पण्डित आर्जव शास्त्री, विदिशा
	पं. अमन शास्त्री, खनियांधाना

ललितपुर

सीमंधर जि.	डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, मुम्बई
शीतलनाथ जि.	पण्डित आराध्य शास्त्री, मुम्बई

गुजरात

बड़ौदा	पण्डित देवेंद्रभाई, हिम्मतनगर
दाहोद	पण्डित विवेक शास्त्री, भिण्ड
भावनगर	पण्डित बाबूभाई मेहता, फतेपुर
सुरेन्द्रनगर	पण्डित विवेक मलाड, मुम्बई
हिम्मतनगर	पण्डित अश्विनभाई, मलाड
सूरत	पण्डित नयन शाह, हैदराबाद
	पण्डित सक्षम शास्त्री, ललितपुर
राजकोट	ब्र. श्रेणिक जैन, जबलपुर
	पण्डित सुनील शास्त्री, राजकोट
	अहमदाबाद
वस्त्रापुर	पण्डित विपिन शास्त्री, नागपुर
नवरंगपुरा	पण्डित मनोजकुमार जैन, जबलपुर
मणिनगर	पण्डित सुरेश शास्त्री, गुना
पालडी	पण्डित गजेंद्र शास्त्री, उदयपुर
मेघाणीनगर	पण्डित अनुभव शास्त्री, जबलपुर
ओढ़व	पण्डित सुकुमाल शास्त्री, गुना
	पण्डित सिद्धार्थ शास्त्री, लुकवासा
चैतन्यधाम	पण्डित राजकुमार शास्त्री, गुना
	पण्डित ज्ञायक शास्त्री, मोरवी
	पण्डित सचिन शास्त्री, गढी
	पण्डित मनीष शास्त्री, खडैरी

महाराष्ट्र

देवलाली	डॉ. मनीष शास्त्री, इंदौर
	पण्डित दीपक धवल, भोपाल
	पण्डित उर्विश शास्त्री, पिड़ावा
	पण्डित समकित शास्त्री, बांझल
नागपुर	पण्डित अनिल, खनियांधाना
कारंजा	पण्डित जिनचन्द शास्त्री, हेरले
कुम्भोज	डॉ. नेमिनाथ शास्त्री, दानोली
बाहुबलि	डॉ. विजयसेन शास्त्री, आलते
सोलापुर	पण्डित प्रदीप झांझरी, इंदौर
पुणे	पण्डित सौरभ शास्त्री, इंदौर
पंढरपुर	पण्डित नेमीचंद शास्त्री, खतौली
हेरले	पण्डित अनिल शास्त्री, अलमान
मलकापुर	पण्डित गौरव शास्त्री, जयपुर
वासिम	पण्डित श्रीपाल जैन, पुणे
हिंगोंली	पण्डित विवेक जैन, गोरझामर
अकोला	पण्डित गुलाबचन्द जैन, बीना
म्हसवड	पण्डित सम्मेद शास्त्री, कतेपुते
डासाला	पण्डित नन्दकिशोर, काटोल
गजपंथा	पण्डित सचिन शास्त्री, अकलूज
	पण्डित अनिल धवल, भोपाल
	पण्डित शुभम शास्त्री, उभेगॉव

अन्य

कोलकाता	पण्डित ऋषभ शास्त्री, उस्मानपुर
एर्नाकुलम	पण्डित अनन्त शास्त्री, सैलू
बेंगलोर	विदुषी स्वर्णलता जैन, नागपुर
यमुनानगर	पण्डित कार्तिक शास्त्री, वान्दा
सम्मेद-शिखर	पण्डित निलय शास्त्री, आगरा
	पण्डित संजय शास्त्री राऊत, पुणे
धारवाड़	पण्डित बाहुबली शास्त्री भोसगे
	दिल्ली
विश्वास नगर	ब्र. प्रवीण जैन, देवलाली
आत्मार्थी	पण्डित जयकुमार शास्त्री, कोटा
कारंजा	पण्डित आलोक शास्त्री, कारंजा
	पण्डित चिंतामण शास्त्री, कारंजा
	पण्डित पंकज शास्त्री सिंघई
	मुंबई
सीमंधर जिनालय	पण्डित अनुभव, करेली
मलाड	पण्डित विराग शास्त्री, जबलपुर
बोरीवली	पण्डित विवेक जैन, छिंदवाड़ा
भायंदर	पण्डित अनिल शास्त्री, भिण्ड
दहिसर	पण्डित कमलचंद जैन, पिडावा
वासी	ब्र. अमितभैया, विदिशा
घाटकोपर	पण्डित रमेश शास्त्री, सोनगढ़

राजस्थान

भीलवाड़ा	डॉ. संजय शास्त्री, गनोड़ा
भिंडर	पण्डित पद्मकुमार जैन, कोटा
पिड़ावा	पं. शुभम शास्त्री, ज्ञानोदय
बिजोलिया	पण्डित राहुल शास्त्री, मुंबई
बाँसवाडा	पं. सुनील शास्त्री, प्रतापगढ़
पीसांगन	पण्डित आर्जव गोधा, जयपुर
आदर्शनगर जयपुर	पं. जिनकुमार शास्त्री, जयपुर
	उदयपुर
मुमुक्षु मंडल	पण्डित रमेश जैन, लवाण
सेक्टर-11	पण्डित अनिल जैन, दहिसर
शाश्वतधाम	पण्डित जितेन्द्र शास्त्री, मुंबई
	पण्डित अंकित शास्त्री, लूणदा
	विदुषी ममता जैन, उदयपुर
	विदुषी आयुषी जैन, उदयपुर
गायरियावास	पण्डित ऋषभ शास्त्री उदयपुर
	कोटा
इंदिरा विहार	पण्डित मनोज शास्त्री, करेली
रामपुरा	पण्डित नरेंद्र शास्त्री, जयपुर
	अजमेर
वीतराग-विज्ञान	पं. विक्रांत पाटनी, झालरापाटन
वैशाली	पण्डित सुनील धवल, भोपाल

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा आयोजित

दशलक्षण महापर्व
एवं
दशलक्षण महामण्डल विधान

19 से 28 सितम्बर, 2023

अध्यात्म से सराबोर जयपुर के दस दिन
आराधना के इस महामहोत्सव में
आप सादर आमंत्रित हैं।

मंगल सानिध्य
बाल ब्र. सुमतप्रकाश, खनियांधाना
पण्डित पीयूष शास्त्री, जयपुर
पण्डित चार्चित शास्त्री, खनियांधाना

स्थान सीमित : पहले आओ, पहले पाओ!

रजिस्ट्रेशन की अंतिम तिथि 5 अगस्त 2023
5 अगस्त के बाद प्राप्त आवेदन स्वीकार नहीं किये जायेंगे।
आवेदन प्राप्त होने पर सिर्फ सीमित लोगों के आवेदन ही स्वीकार किये जा सकेंगे।
जो साधर्मी दसलक्षण में यहाँ रहकर धर्म लाभ लेना चाहते हो तो
आप इस +91 8949033694 नम्बर पर सम्पर्क कर अपनी बुकिंग करा लें।
सम्पूर्ण कार्यक्रम आप हमारे YouTube Channel एवं Facebook Page पर लाईव देख सकते हैं।

PTST_JAIPUR +91 8949033694 www.ptst.in PTST.LIVE

हमारे शास्त्री स्नातक बंधुओं से विनम्र अनुरोध

महाविद्यालय में शिक्षा पाकर -

मेरा जीवन किस प्रकार आमूल बदल गया

मेरे प्रिय स्नातक मित्रो!

मुझे पूर्ण विश्वास है कि महाविद्यालय में प्रवेश लेकर शिक्षा पाने के कदम ने आपके और आपके परिजनों के जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है।

महाविद्यालय में प्रवेश के पूर्व आपकी और आपके परिवार की क्या स्थिति थी वह आप भूले नहीं होंगे।

आज आप जो और जैसे हैं यह हमारे और आपके समक्ष प्रत्यक्ष है। इस संदर्भ में आपका क्या अभिप्राय है?

यदि आपके जीवन में यह अवसर न आया होता तो आज आप क्या होते? या उस समय के आपके जो तत्कालीन साथी आपके समान ही परिस्थितियों में जीवन व्यतीत कर रहे थे, वे आज क्या कर रहे हैं और आज आप उनसे किस प्रकार भिन्न हैं?

एक दिन कोई आपका हाथ थामकर आपको इस मार्ग पर लाया था, उसका आप पर अनंत उपकार रहा, फलस्वरूप आपके जीवन में यह क्रांति हुई, यदि आज आपके अनुभव किसी पात्र जीव को इस मार्ग पर लगने को प्रेरित कर पाए तो क्या यह उसके प्रति आपका अनंत उपकार नहीं होगा?

निम्नलिखित बिंदुओं को स्पर्श करते हुए आपके ऐसे संस्मरण हमें अवश्य लिख भेजें जो आज के बालकों को महाविद्यालय में प्रवेश हेतु प्रेरित कर सकें और उनके जीवन में क्रांति की वही कहानी एक बार फिर दोहराई जा सके।

क्या आप यह, मात्र अंगुली दिखाकर (मार्ग दिखाकर, गुजराती में कहावत है '**आँगड़ी चींध्यानु पुण्य**') यह महापुण्य नहीं कमाना चाहेंगे?

यदि हाँ, तो अपने संस्मरण अवश्य लिख भेजें।

उपयोगी पाए जाने पर हम उन्हें अवश्य प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे।

आप अपने आलेख में निम्न बिंदुओं को स्पर्श कर सकते हैं -

- **मेरी पूर्व परिस्थितियाँ क्या थीं?**
- **यदि मैं महाविद्यालय में न आता तो मेरे पास अन्य विकल्प क्या थे?**
- **यदि मैंने महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त न की होती तो आज मैं क्या होता?**
- **आज मैं क्या हूँ?**
- **क्या होते और क्या हूँ का तुलनात्मक अध्ययन।**
- **आपके इस कदम से आपकी आगामी पीढ़ियों पर क्या प्रभाव पड़ा है?**
- **अपने अनुभवों से समाज को क्या प्रेरणा देना चाहते हैं?**

- परमात्मप्रकाश भारिल्ल
सम्पादक : जैन पथप्रदर्शक

दादा (पण्डित रतनचन्द भारिल्ल) की डायरी से...

एक लघु कथा

आत्मज्ञान के बिना शास्त्रों का ज्ञान, विज्ञान का ज्ञान, साहित्य व सभ्यता का ज्ञान एक ऐसे अहंकार का जनक बन जाता है, जो हमें अपने अनादिकालीन अज्ञान का ज्ञान नहीं होने देता। जैसा कि कहा भी है -

'आत्मज्ञान ही ज्ञान है, शेष सभी अज्ञान'

जो उधार के ज्ञान से अपने को ज्ञानी मान बैठे हैं, पराये ज्ञान को ही अपना ज्ञान मान बैठे हैं, उनका स्वयं के आत्मा के ज्ञानर्जन की ओर ध्यान ही नहीं जाता। आत्मज्ञान संबंधी अपने अज्ञान का ज्ञान होना जरूरी है। इसके लिए एक कहानी है। संभव है कि इस कहानी के माध्यम से सबको अपने अज्ञान का ख्याल आ जाएगा।

पूर्णिमा की रात में एक विलक्षण व्यक्ति अपने घास-पूस के झोपड़े में मोमबत्ती जलाकर कोई ग्रंथ पढ़ रहा था। पढ़ते-पढ़ते लगभग आधी रात वीत चुकी थी और वह थक गया था। तब उसने मोमबत्ती बुझाकर सोने की तैयारी की। मोमबत्ती के बुझते ही झरोखों से चाँद की शीतल, स्वच्छ प्रकाश की किरणों ने झोपड़ी में प्रवेश किया। प्रकाश की किरणें देख वह बाहर गया तो उसने पूर्णिमा के चाँद को देखा। चाँद को देखते ही वह प्रसन्न भी हुआ और साथ ही पछताया भी कि अरे! मैंने अपने अज्ञान के कारण आधी रात यूँ ही इस धुएँ वाली मोमबत्ती के टिमटिमाते प्रकाश में बिता दी। काश मुझे पता होता कि बाहर तो विश्व को प्रकाशित करने वाले चंद्रमा का शीतल प्रकाश बिखर रहा है। अस्तु -

ठीक इसी प्रकार अनेक लोग अपना पूरा जीवन यूँ ही बिता देते हैं और बहुत कम लोग होते हैं जो अपने पूरे जीवन में से आधा जीवन भी सच्चा ज्ञान पाने के लिए प्रयत्न कर पाते हैं। अत: अधिकतर लोग अपना पूरा ही जीवन या आधा जीवन धुयें वाली मोमबत्ती के टिमटिमाते प्रकाश जैसे अज्ञान के ज्ञान में, परलक्षी ज्ञान में ही गवा देते हैं।

संकलन - श्रीमती कमला भारिल्ल (बड़ी बाई)

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
सह-सम्पादक : **पीयूष जैन**
प्रकाशक व मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 28 जूलाई 2023

प्रति,